PROFORMA FOR SYNOPSIS

(Clause 5 of the ordinance - 45)

1	Title of the Thesis	:	दुर्ग संभाग में जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक की कृषि ऋण संबंधी भूमिका का मूल्यात्मक अध्ययन
2	Introduction (in 250 words)	:	5
3	Subject selection	:	6
4	Objectives	:	7
5	Hypotheses	:	8
6	Proposal Methodologies	:	10
7	Proposal area	:	11
8	Expected conclusion	:	12
9	Bibliography	:	14
10	Published Research Paper Of the candidate	:	संलग्न 16

निर्देशक	प्राचार्य	शोधकर्ता
डॉ हरजिन्दर पाल सिंह सलूजा		भुनेश्वर प्रसाद
प्राध्यापक – वाणिज्य शा. वि. या. ता. स्नातकोत्तर स्वशासी महा. दुर्ग (छ. ग.)	शा. वि. या. ता. स्नातकोत्तर स्वशासी महा. दुर्ग (छ. ग.)	शा. वि. या. ता. स्नातकोत्तर स्वशासी महा. दुर्ग (छ. ग.)

शोध प्रबंध का शीर्षक

दुर्ग संभाग में जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक की कृषि ऋण संबंधी भूमिका का मूल्यात्मक अध्ययन

प्रस्तावित शोध प्रबंध की रूप–रेखा

अध्याय 1 : प्रस्तावना

1.1 भूमिका
1.2 शोध अध्ययन का आशय
1.3 शोध विषय का चयन
1.4 शोध विषय के उद्‌देश्य
1.5 शोध परिकल्पना
1.6 शोध प्रविधि का औचित्य
1.7 शोध विषय का क्षेत्र

अध्याय 2 : दुर्ग संभाग का परिचय

2.1 दुर्ग संभाग का ऐतिहासिक परिचय
2.2 दुर्ग संभाग की लिंगानुपात, शिक्षा व सांस्कृतिक परिचय
2.3 दुर्ग संभाग के ग्रामीण क्षेत्रों का परिचय

अध्याय 3 : जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक का परिचय

3.1 बैंक का परिचय एवं इतिहास
3.2 दुर्ग संभाग में बैंकों के शाखाओं की सूचि

3.3 बैंक की वर्तमान स्थिति
3.4 कार्यरत संस्थाएं
3.5 बैंक की दशा एवं दिशा

अध्याय 4 : पूँजी संरचना
4.1 साख से आशय व आवश्यकता
4.2 संभाग में साख का ढ़ाचा व वर्गीकरण
4.3 कोषों का वित्तीय स्त्रोत एवं उपयोग

अध्याय 5 : जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक के जमा, ऋण वितरण व वसूली
5.1 बैंक की जमा योजनाएं
5.2 ऋण संबंधित योजनाएं
(अल्पकालीन, मध्यकालीन एवं दीर्घकालीन)
5.3 ऋण योजनाओं का क्रियान्वयन
5.4 ऋण वसूली की स्थिति
5.5 सरकार द्वारा घोषित ऋण माफी योजना का प्रभाव

अध्याय 6 : सर्वेक्षित हितग्राहियों का अध्ययन
6.1 अध्ययन की सीमाएं
6.2 सर्वेक्षित हितग्राहियों का वर्गीकरण
6.3 प्रश्नावली व साक्षात्कार , अनुसूचि

अध्याय 7 : समस्याएं एवं समाधान

भूमिका

भारत एक कृषि प्रधान देश है यहां की 80 प्रतिशत जनसंख्या ग्रामों में निवास करती है व भारत देश की आत्मा ग्रामों में निवास करता है इसलिए भारत देश ग्रामों का देश है यहॉ का मुख्य उद्यम कृषि है भारत की अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित है यहां की 70 प्रतिशत जनसंख्या के जीवन निर्वाह का मुख्य साधन कृषि है।

कृषि में विकास के लिए सरकार ने अनेक कदम उठाए है भारत में सहकारी बैंक भी बैंकिंग के आधारभूत कार्य सम्पन्न करते है किन्तु वे वाणिज्यिक बैंक से भिन्न प्रकार के होते है भारत में सहकारी बैंक का गठन तीन स्तरों वाला है राज्य सहकारी बैंक संबंधित राज्य में शीर्ष संस्था होती है इसके बाद केन्द्रीय या जिला सहकारी बैंक जिला स्तर पर कार्य करती है तृतीय स्तर प्राथमिक ऋण समिति का होता है जो ग्राम स्तर पर कार्य करती है जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक अपना कार्यशील पूँजी निम्न साधनों द्वारा एकत्र करते है (1) हिस्सा पूँजी (2) संचित कोष (3) जमा पूँजी (4) राज्य सहकारी बैंक से प्राप्त ऋण तथा (5) सरकारी अनुदान । जिससे कि कृषि में विकास हो और कृषकों की वित्तीय समस्या का समाधान हो। यह बैंक मुख्य रूप से सदस्य सहकारी समितियों को अल्पकालीन, मध्यकालीन एवं दीर्घकालीन ऋण प्रदान करते है फसल प्रणाली के अंतर्गत किसानों की फसलों को अच्छे ढंग से उगाने व उत्पादन क्षमता को बढ़ाने के लिए फसलों की लागत के आवश्यकतानुसार ऋण की मात्रा निर्धारित की जाती है इस प्रणाली में बीज, उर्वरक, कीटनाशक, उत्तम कृषि यंत्र एवं आधुनिक तकनीक के रूप में ऋण दिया जाता है तथा शेष राशि को नगदी के रूप में दिया जा सकता है ये अल्पकालीन ऋण होते है।

सहकारिता से आशय

भारत में सहकारिता आंदोलन प्रारंभ करने का श्रेय ‘‘सर विलियम बर्न ‘‘ और ‘‘ जस्टिस रानेड ‘‘ को दिया जाता है सहकारी समितियों से संबंधित अधिनियम का निर्माण 1904 में हुआ है जिसमें समितियों के माध्यम से कृषको को राहत देने का कार्य भी किया गया है।

जब किसी काम को लोग मिल–जुलकर परस्पर सहयोग से करते है तब उसे सहकारिता कहते है संकुचित अर्थ में सहकारिता का अर्थ यह है कि कोई काम लाभ की भावना को छोडकर सेवाभाव से किया जाए भारतीय सहकारी नियोजन समिति 1946 के अनुसार : सहकारिता ऐसे व्यक्तियों का एक स्वेच्छिक संगठन है जो लोकतंत्र, समानता तथा आत्म सहायता के आधार पर निजी हित तथा संपूर्ण समाज के हित के लिए काम करता है यह एक सामाजिक तथा आर्थिक आंदोलन है जिसका नारा '' कार्य '' एवं '' सेवाभाव '' है सहकारी समाज में सदस्यों का आदर्श कुछ दूसरा होता है ऐसे समाज में लोग प्रायः गरीब होते है और एक दूसरे की उन्नति के लिए काम करते है यदि किसी काम को कोई आदमी अकेला नही कर सकता, तो कई आदमी मिलकर उसे करने की कोशिश करते है सहकारिता न पूँजीवाद है न साम्यवाद।

सहकारिता एक महानतम् आदर्श है यह मानव जीवन में प्रतिस्पर्द्धी हितों के लिए वर्ग संघर्ष की भावना को सभी की सामान्य भलाई के लिए मैत्री पूर्ण स्पर्द्धा की भावना में बदल देती है।

– मिल

शोध अध्ययन का चयन

शोध हेतु ''दुर्ग संभाग में जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक की कृषि ऋण संबंधी भूमिका का मूल्यात्मक अध्ययन '' का चयन वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक के महत्व और उसकी कृषि कार्य में भूमिका को ध्यान में रखकर किया गया है जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक कृषि कार्य में विकास के साथ ही साथ कृषकों से अन्य बैंक की तरह जमा भी स्वीकार करता है इस तरह जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक कृषको को कृषि कार्य के लिए प्राथमिक वित्त सुविधाएं उपलब्ध कराता है।

शोध विषय ''दुर्ग संभाग में जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक की कृषि ऋण संबंधी भूमिका का मूल्यात्मक अध्ययन '' वर्तमान में कृषि कार्य में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है वह कृषको को कृषि कार्य हेतु खाद बीज (अल्पकालीन, मध्यकालीन एवं दीर्घकालीन) ऋण उपलब्ध करा कर कृषि में महत्वपूर्ण योगदान कर रहा है केन्द्रीय सहकारी बैंक का गठन सन् 1912 के

सहकारी साख समिति अधिनियम के लागु होने के बाद से शुरू किया गया है इन्हे जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक भी कहते है जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक की प्रमुख बातें यह है कि प्राथमिक सहकारी समिति ही इन बैंकों की सदस्य होती है तथा विशेष परिस्थितियों में व्यक्ति भी इनके सदस्य होते है जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मुख्य रूप से सहकारी समितियों के सदस्य को 1 प्रतिशत (वर्तमान में) की ब्याज दर पर अल्पकालीन ऋण प्रदान करती है।

वर्तमान में जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक की आवश्यकता कृषकों के लिए अधिक हो गई है इस प्रस्तुत शोध '' दुर्ग संभाग में जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक की कृषि ऋण संबंधी भूमिका का मूल्यात्मक अध्ययन '' में जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक द्वारा कृषि के क्षेत्र में भूमिका, इसके महत्व इसकी संभावनाओं को प्रस्तुत करना है तथा जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक से कृषि के क्षेत्र में हुए आर्थिक विकास का और इसके संभावनाएं हेतु आवश्यक सुझाव प्रस्तुत करना है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

शोध विषय पर कार्य करने से पहले यह सुनिश्चित किया जाता है कि इस शोध अध्ययन के उद्देश्य क्या है किसी भी शोध अध्ययन के सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक दोनो ही प्रकार के उद्देश्य होते है जो निम्नानुसार है :–

सैद्धान्तिक उद्देश्य :–

शोध के उद्देश्य और भूमिकाएं बहुत ही महत्वपूर्ण होते है इसमे शोध अध्ययन की दिशा का निर्धारण, ज्ञान की कमी की व्याख्या करना, समंको की विश्लेषण, सारणीयन तथा वर्गीकरण करना, शोध की समस्या का ज्ञान करना और समाधान हेतु प्रभावी सुझाव को सुव्यवस्थित करना आदि होता है।

व्यवहारिक उद्देश्य :–

शोध का प्रमुख उद्देश्य ज्ञान का विकास करना तथा नवीन ज्ञान की प्राप्ति करना है व्यवहारिक शोध घटनाओं तथा अध्ययन की सामग्री से संबंधित तथ्यों का अध्ययन करना एवं नए नए सिद्धांतो की प्रतिपादित करना है

गुडे एवं हॉट के मतानुसार – सैद्धान्तिक व व्यवहारिक उद्देश्य एक दूसरे के विपरित नही है बल्कि एक दूसरे के पूरक है

शोध अध्ययन हेतु निश्चित उद्देश्य निम्नलिखित है :–

1 जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक के कार्यों का अध्ययन करना।

2 जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक के विकास का अध्ययन।

3 जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक से लाभान्वित कृषक तथा इसके प्रभावो का अध्ययन।

4 जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक की ग्रामीण विकास हेतु विभिन्न योजनाओं का अध्ययन।

5 बैंक के विभिन्न समस्याओं का अध्ययन तथा समस्याओं के समाधान हेतु प्रभावी सुझाव प्रस्तुत करना।

6 कृषक बैंक की कार्य प्रणालियों से संतुष्ट है यदि नही तो कारण को जानना।

7 उपज में वृद्धि हेतु खाद एवं बीज के वितरण व्यवस्था का अध्ययन

8 राज्य में बैंक की संभावनाएँ एवं सुधार हेतु आवश्यक सुझाव।

परिकल्पना

किसी भी शोध कार्य को प्रारंभ करने पूर्व उसका लक्ष्य निश्चित करते है शोध में यही लक्ष्य परिकल्पना के रूप में निश्चित किया जाता है परिकल्पना का शाब्दिक अर्थ पूर्व विचार है परिकल्पना को प्राक्कल्पना भी कहते है बिना परिकल्पना के एक कदम भी आगे बढ़ना संभव नही है वास्तव में शोधकर्ता द्वारा अपने अध्ययन हेतु अपनाया गया प्रारंभिक बिन्दु ही परिकल्पना के रूप में वर्णित किया जा सकता है जिस प्रकार ध्रुव तारा रास्ते में भटके हुए राही को दिशा प्रदान करता है ठीक उसी प्रकार परिकल्पना भी शोधकर्ता को अनुसंधान कार्य

करने हेतु दिशा निर्देश करती है परिकल्पना प्रारंभ से लेकर अंत तक सभी अनुसंधान का आधार है जिसका सत्यता को सिद्ध करने के लिए उसकी परीक्षा की जा सकती है

शोध पत्र पत्रिकाओं एवं समाचार पत्र में इस संदर्भ में प्रकाशित लेखे एवं दुर्ग संभाग के हितग्राहियों से किए गए प्रत्यक्ष साक्षात्कार के आधार पर निम्नलिखित परिकल्पनाएं की गई है शोध कार्य के आधार पर यह निष्कर्ष निकाले जा सकते है कि निम्नलिखित परिकल्पनायें सत्य है अथवा नही

- कृषक जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक का योजनाओं का लाभ उठा रहे है
- बैंक की योजनाओं से कृषकों को आर्थिक एवं सामाजिक रूप से लाभ हुआ है
- हितग्राहियों का चयन भेदभावपूर्ण किया जा रहा है
- हितग्राहीयों को प्राप्त होने वाला ऋण पर्याप्त है या नही
- सेवा सहकारी समिति के माध्यम से कृषक अपने उपज का विक्रय करने में संतुष्ट है
- कृषक अपने उपज को सेवा सहकारी समिति में विक्रय करने से उन्हे क्या क्या समस्याओं का सामना करना पड़ता है
- बैंक से ऋण प्राप्त करने के बाद वार्षिक आय में वृद्धि हुई है
- सेवा सहकारी समिति से प्राप्त होने वाली ऋण (अल्पकालीन, मध्यकालीन एवं दीर्घकालीन) की प्रक्रिया सरल है
- सेवा सहकारी समिति से उन्हे अल्पकालीन, मध्यकालीन एवं दीर्घकालीन ऋण प्राप्त करने हेतु किसी सेवा युक्त को कोई आर्थिक लाभ पहुचायां है
- प्राप्त ऋण का उपयोग पूर्णतः सद्उपयोग नही हो सका
- ऋणों का उपयोग अनुत्पादक कार्यों में हुआ है
- ऋण वापसी में हितग्राहियो को सरकार द्वारा घोषित ऋण माफी योजना का प्रभाव हुआ है
- हितग्राही ऋण पर ब्याज की दर से संतुष्ट है
- सेवा सहकारी समिति से ऋण प्राप्त करने में कृषक अधिक रूचि दिखा रहे है।

अनुसंधान प्रविधियां

रेडमैन और मौरी के अनुसार – ''नवीन ज्ञान की प्राप्ति हेतु व्यवस्थित प्रयत्न को हम अनुसंधान कहते है'' शोधकर्ता के निरंतर प्रयोग तथा प्रयत्न से जो ज्ञान में वृद्धि करे अनुसंधान कहलाता है शोध नुतन ज्ञान की प्राप्ति तथा उपलब्ध ज्ञान की व्याख्या करता है संसार में अनेक प्राणी है परन्तु मानव एक ऐसा प्राणी है जो प्रारंभ से ही अपने पर्यावरण के प्रति जागरूक एवं जिज्ञासु रहा है उसने अपनी तर्क शक्ति, बुद्धि, चिन्तन, मनन आदि के द्वारा प्राकृतिक एवं सामाजिक पर्यावरण का अवलोकन किया है यह जिज्ञासा विभिन्न क्रियाओं एवं घटनाओं की ओर ध्यान आकर्षित एवं कार्य कारण के संबंधों की व्याख्या की है

शोध कार्य की प्रक्रिया जटिल होती है शोध कार्य में सरलता लाने एवं उचित और व्यवस्थित परिणाम प्राप्त करने के लिए उनका वैज्ञानिक रूप में व्यवस्थित ढंग से शोध कार्य को पूर्ण करते हुए वैज्ञानिक प्रविधियों का प्रयोग किया जाता है

शोध अध्ययन में निश्चित परिणाम प्राप्त करने के लिए समंक संकलन हेतु प्राथमिक एवं द्वितियक दोनो प्रकार के समंको का प्रयोग किया गया है

<u>प्राथमिक समंक</u>

<u>साक्षात्कार</u> :– साक्षात्कार प्राथमिक सामग्री के संकलन का प्रत्यक्ष स्त्रोत है इसमे अनुसंधानकर्ता अध्ययन विषय से संबंधित व्यक्तियों से प्रत्यक्षतः संपर्क कर सुचनाओं एवं समंको का संकलन करता है यह आकड़े एवं समंक अधिक सत्य होते है

अवलोकन :— अवलोकन प्रविधि के अंतर्गत अनुसंधानकर्ता स्वयं अध्ययन से संबंधित क्षेत्र में जाकर विविध घटनाओं, कार्य कारणों एवं दशाओं की पक्षपात रहित जानकारी प्राप्त करता है व उसका संकलन करता है

प्रश्नावली :— प्रश्नावली शब्द प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने की एक तकनीक है प्रश्नावली प्राथमिक आकड़ो, समंको एवं तथ्यों को प्राप्त करने की एक ऐसी प्रणाली है जिसमे प्रश्नावली को उत्तरदाता के द्वारा स्वयं भरा जाता है

द्वितियक समंक

- जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक के प्रतिवेदन
- पत्र पत्रिकाएं
- शोध अध्ययन से संबंधित पुस्तकें
- शोध प्रबंध व प्रतिवेदन
- शासकीय आकड़े
- गैर शासकीय आकड़े

शोध के क्षेत्र

शोध अध्ययन हेतु शोध क्षेत्र छत्तीसगढ़ राज्य के दुर्ग संभाग का चयन किया गया है दुर्ग संभाग छत्तीसगढ़ राज्य का नवनिर्मित संभाग है इस संभाग का भौगोलिक क्षेत्रफल 20,480 वर्ग किमी है रायपुर संभाग के अंतर्गत कुल 5 जिले आते है दुर्ग, राजनांदगॉव, कबीरधाम, बालोद तथा बेमेतरा है तथा संभाग में कुल विकासखण्ड़ एवं तहसीलों की संख्या 25 है दुर्ग संभाग के अंतर्गत जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक की मुख्य शाखा एवं विकास खण्ड स्तर पर कार्यरत शाखाओं का चयन कर हितग्राहियों से प्रत्यक्ष साक्षात्कार कर शोध कार्य पूर्ण किया जायेगा।

शोध अध्ययन में प्राथमिक समंको के संकलन करने हेतु साक्षात्कार का प्रयोग किया जायेगा जिसमें दुर्ग संभाग से सभी 5 जिलों के सभी 25 विकासखण्ड़ एवं तहसीलों से 10 – 10 हितग्राहियों का साक्षात्कार हेतु चयन निदर्शन विधि से किया जायेगा।

शोध अध्ययन की अवधि :–

शोध कार्य हेतु जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक के वार्षिक प्रतिवेदन से विगत पांच वर्षो क्रमशः सत्र 2008–09 ,2009–10 ,2010–11, 2011–12, 2012–13 के ऑकड़ों का प्रयोग द्वितीयक समंको के रूप में लिया जायेगा प्राथमिक समंक में सत्र 2012–13 के आकड़ो का हितग्राहियों से प्रत्यक्ष साक्षात्कार कर संकलन किया जायेगा।

आनुमानित निष्कर्ष

जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक की कृषि कार्य में महत्व एवं भूमिका बढ़ रही है दुर्ग संभाग में जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक की उपलब्धियां एवं संभावनाओं का विस्तृत , गहन और विश्लेषणात्मक अध्ययन एवं मूल्यांकन कर तथा प्राथमिक तथा द्वितियक प्रविधियों से समंक संकलन के आधार पर निष्कर्ष प्रस्तुत किया जाएगा प्रस्तुत शोध अध्ययन में द्वितियक समंको की अपेक्षा प्राथमिक समंकों का प्रयोग अधिक किया जाएगा

इस शोध कार्य से निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हा सकते है :–

1 जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक कृषि कार्य में अपनी प्रमुख भूमिका निभा रहे है

2 जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक द्वारा कृषको की उन्नति हेतु योजनाओं का विकास किया जाना चाहिए

3 सेवा सहकारी समिति के द्वारा कृषको को प्रदान की जाने वाली सुविधाओं का विकास किया जाना चाहिए

4 बैंक द्वारा चलाए जा रहे वर्तमान योजनाओं की स्थिति तथा भविष्य की योजनाओं एवं कृषि विकास की संभावनाओं में वृद्धि होगी

5 जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक के कार्यों का अध्ययन एवं मूल्यांकन कर उचित निष्कर्ष प्रस्तुत किया जाएगा जिससे सरकार को विकास हेतु सकारात्मक कदम उठाने में मदद मिलेगी

6 दुर्ग संभाग में कृषि कार्य की स्थिति का अध्ययन एवं भविष्य में कृषि कार्य में विकास हेतु प्रभावी सुझाव प्रस्तुत किया जाएगा जो कि कृषि के विकास के साथ साथ बैंक के विकास के लिए भी महत्वपूर्ण होगा

सदर्भ ग्रंथ सूचि

क्र.	लेखक का नाम	पुस्तक का नाम	पब्लिकेशन का नाम	संस्करण
1	अग्रवाल ए एन	भारतीय अर्थशास्त्र विकास एवं आयोजन	विश्व प्रकाशन	1994
2	अग्रवाल एन एल	भारतीय कृषि का अर्थशास्त्र	राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी जयपुर	1983
3	दत्त, रूद्र एवं सुंदरम् के पी एम	भारतीय अर्थशास्त्र	एस चन्द्र एण्ड कम्पनी लिमि. नई दिल्ली	1998
4	डॉ गुप्ता एस पी, अग्रवाल एम डी	भारतीय अर्थशास्त्र	ईना श्री पब्लिशर्स जयपुर	1999
5	डॉ मामोरिया चतुर्भुज	भारत का आर्थिक विकास एवं नियोजन	साहित्य भवन पब्लिकेशन आगरा	2006
6	डॉ मामोरिया चतुर्भुज डॉ जैन एस सी	भारतीय अर्थशास्त्र	साहित्य भवन पब्लिकेशन आगरा	2009
7	मिश्र एस के पुरी वी के	भारतीय अर्थव्यवस्था	हिमालया पब्लिकेशन हाउस	1993
8	डॉ माथुर वी एल	आर्थिक नीति एवं विकास	अर्जुन पब्लिकेशन	2009
9	डॉ देशमुख नीलिमा	आर्थिक नीति एवं प्रशासन	कॉलेज बुक डिपो मुंबई	1999
10	कपुर सुदर्शन कुमार	भारतीय कृषि अर्थव्यवस्था	राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी जयपुर	1974
11	सक्सेना आर सी मिश्र पी एल	कृषि अर्थशास्त्र	शिक्षा साहित्य प्रकाशन मेरठ	1981
12	सिन्हा वी सी	भारतीय अर्थशास्त्र	साहित्य भवन पब्लिकेशन आगरा	2003

13	यादव सुबह सिंह	कृषि अर्थशास्त्र	रावत पब्लिकेशन	1992
14	यादव सुबह सिंह	विश्व व्यापार संगठन एवं कृषि अर्थव्यवस्था	यादव , हेमा सब लाइम पब्लिकेशन	2003
15	शर्मा के एस	छत्तीसगढ़ का सामाजिक आर्थिक इतिहास	नेशनल पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली	1998
16	दास हरसरन	कृषि अर्थशास्त्र	रामा पब्लिशिंग हाउस दिल्ली	2012
17	डॉ सिंह राजपाल	कृषि अर्थशास्त्र	वी के प्रकाशन बड़ौत	2012
18	डॉ ठाकुर बी एस	सहकारिता	साहित्य भवन पब्लिकेशन आगरा	2012
19	भाई इस्माईल	छत्तीसगढ़ समग्र सामान्य ज्ञान	नवबोध प्रकाशन रायपुर	2012
20	शर्मा विरेन्द्र प्रकाश	रिसर्च मेथडॉलॉजी	पंचशील प्रकाशन जयपुर	2011

समाचार पत्र पत्रिकाएं

- दैनिक भास्कर
- हरिभूमि
- नई दुनिया
- नवभारत
- कृषि जगत

www.cg.nic.in

An International Research Journal (Online & Print journal)

S. No.	Title of the paper	Authors	Journal detail				
			Name	Vol. No.	Page NO.	Impact	ISSN No.
1.	छत्तीसगढ़ राज्य में कृषि एवं ग्रामीण विकास सहकारी बैंक की दशा व दिशा	हरजिन्दर पाल सिंह सलूजा रवीश कुमार सोनी भुनेश्वर प्रसाद	Golden Research Thoughts	Vol. 2 Issue 1 july 2012	79-81	1.2018	2231-5063
2.	बस्तर संभाग में जिला सहकारी कृषि और ग्रामीण विकास बैंक के हितग्राहियों का अध्ययन	हरजिन्दर पाल सिंह सलूजा रविश कुमार सोनी भुनेश्वर प्रसाद हरजीत सिंह भाटिया	Golden Research Thoughts	Vol. 2 Issue 3 sep 2012	-	1.2018	2231-5063
3.	जिला सहकारी कृषि एवं ग्रामीण विकास सहकारी बैंक के कार्यों का मूल्यांकन (रायपुर संभाग के संदर्भ में)	हरजिन्दर पाल सिंह सलूजा रवीश कुमार सोनी भुनेश्वर प्रसाद	Contemporary Research in India	Vol. 2 Issue 3 sep 2012	173-176	-	2231-2137

निर्देशक
28.01.14
डॉ हरजिन्दर पाल सिंह सलूजा
Professor
प्राध्यापक – वाणिज्य
शा. वि. या. ता. स्नातकोत्तर
स्वशासी महा. दुर्ग (छ. ग.)

प्राचार्य
Principal
Govt. V.Y.T. P.G. Autonomous College, Durg (C.G.)
शा. वि. या. ता. स्नातकोत्तर
स्वशासी महा. दुर्ग (छ. ग.)

शोधकर्ता
भुनेश्वर प्रसाद
शा. वि. या. ता. स्नातकोत्तर
स्वशासी महा. दुर्ग (छ. ग.)